बलि जाउँ, युगल सरकार की ।
इतै रवति सुर मधुर-मुरलिका, नागर नंदकुमार की ।
उत ते आई भानुनंदिनी, जनु मूरति श्रृंगार की ।
कुंज कुटीर तीर कालिंदी, मिलनि दुहुँन दृग चार की ।
लखहु द्वैत-अद्वैत अधुरिमा, युगल-माधुरि-प्यार की ।
यह 'कपालु' भी चहत बूँद इक, प्रेम पयोधि अपार की ॥

भावार्थ - मैं राधा-कृष्ण दोनों की बलैया लेता हूँ । इधर तो यमुना के किनारे श्यामसुन्दर की मधुर-मुरली की, एवं उधर सोलह श्रृंगार से युक्त प्रमत्त गजराज के समान चलनेवाली राधिकाजी की बार बार बलैया लेता हूँ । यमुना के किनारे जहाँ शीतल, मंद, सुगन्धित वायु बह रही है, प्रिया प्रियतम के चार आँखों से युक्त मधुर मिलन की बलि-बलि जाता हूँ । अरे ज्ञानियों ! राधाकृष्ण रूपी द्वैत में प्रेम के अद्वैत की माधुरी को देखो । इस युगल माधुरी के प्यार पर मैं बलि-बलि-जाता हूँ । 'कृपालु' कहते हैं कि मैं भी उसी अपार प्रेम समुद्र की एक बूँद चाहता हूँ ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिषत्